अध्याय 17

वाद्य का सचित्र वर्णन

तबला

उत्तर भारतीय संगीत में प्रयुक्त ताल वाद्य 'तबला' वर्तमान समय का सर्वाधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय अवनद्ध वाद्य है। आज से लगभग 700 वर्ष पूर्व पखावज के ही आधार पर दो हिस्सों में बनाया गया, एवं प्रथम तबला वादक दिल्ली के उस्ताद सिद्धार खाँ ने पखावज के बोलों को बंद करके तबले पर नये ढंग से बजाने का प्रचलन किया, ऐसी मान्यता प्राप्त है।

तबले के दो खण्ड होते है जो सामने ज़मीन पर रखकर बजाये जाते है उनमें से जो दायें हाथ से बजाया जाता है उसे दायाँ तबला या 'मादी' 'नरघा' 'धुक्कड' कहते है और जो बायें हाथ से बजाया जाता है उसे बाँया 'डग्गा' तथा 'भांडिया' कहते है।

दाहिना या तबला : तबला जोड़ी का वह भाग बजाया जाता है उसे दाहिना या केवल तबला कहते है यह लकड़ी का बना होता है, आम, खैर, शीशम, चंदन, बबूल, कटहल तथा विजय सार की लकड़ी का बनता है इसके नीचे का भाग प्रायः आठ इंच और ऊपर का सात इंच गोलाई का होता है इसकी ऊँचाई लगभग एक फुट की होती है जिस तबले का मुख चौड़ा होता है उसे नीचे स्वर में तथा जिसका मुख कम चौड़ा होता है उसे ऊपर के स्वर में मिलाया जाता है। तबले का काठ वजनी होना चाहिए, इससे तबले पर थाप मारने से गूँज अच्छी निकलती है।

तबले के अंग

डग्गा या बाँया : तबला जोड़ी का यह भाग दाहिने की अपेक्षा कम ऊँचा, बीच का भाग अधिक आकार (व्यास) का और मुँह दाहिने की तुलना में काफी अधिक होता है। डग्गा प्रायः मिट्टी का होता था किन्तु वर्तमान में पीतल या ताँबे का बनता है। कुछ लोग बाये पेंदी में रांगा या सीसा डालकर उसे भारी करते है। फलस्वरूप उसमें गूँज अधिक निकलती है और वह इधर उधर हिलता नहीं है।

पुडी या पूड : तबले के मुख पर चमड़े से मढ़े हुये सम्पूर्ण भागों को, जिसके अन्तर्गत गजरा या चोटी, लव, स्याही आदि सम्मिलित है उसे 'पुड़ी' या 'पूड' कहते है। दायें तबले की पुडी पतली और बाँये की कुछ मोटे चमड़े की बनी होती है। खाल को चूने के पानी में भिगोया जाता है, उसके बाद ही पूड़ी बनाई जाती है। कोलकत्ता और बनारस की पूडी हिन्दुस्तान में बहुत मशहूर है क्योंकि इसमें थाप मारने से कुछ देर बाद गूंज टिकी रहती है।

स्याही : पुडी के बीचों बीच और चाँटी के करीब एक या पौन इंच की दूरी पर गोल आकृति में काले रंग का मसाला लगा रहता है उसे ही स्याही कहते है, जो लोहे के बुरादा या राख, नीला थोथा, लेई और सरेस आदि मिलाकार तैयार की जाती है। स्याही लगाने के बाद उसे कसौटी पत्थर से उसकी परत दर परत घुटाई अधिक से अधिक सुर के हिसाब से की जाती है। जिसमें दरार पड़कर दाना या रखा या रेज़ा न उखड़ जाए इसी से वाद्य में गूँज (आस) पैदा होती है। गजरा : जिस प्रकार दाहिने तबले की पुडी के चारों और चमड़े की

गुथी हुई चोटी होती है उसी प्रकार बाँये में भी गुथी हुई चोटी रहती है जिसे 'गजरा' कहते है। इस गजरे में 16 घर होते इन घरों में चमड़े की बद्दी डाल देते है कुछ लोग चमड़े के स्थान पर सूत की डोरी भी डाल देते है।

गट्टे : दाहिने तबले में लकड़ी के लम्बे और गोल टुकड़े बद्धी के नीचे कसे होते है, उसे गट्टा कहते हैं, गट्टे प्रायः 3 इंच लम्बे और एक इंच मोटे होते है जो तबले को ऊँचे अथवा नीचे स्वरों में मिलाने के काम आते हैं। इनकी संख्या 8 होती है इन्हें स्वर में मिलाने के लिए गट्टों पर हथौड़ी से प्रहार किया जाता है।

चाँटी : पुड़ी के किनारे–किनारे तथा गजरे के बाद करीब आधा या पौन इंच चमड़े की एक गोट सी लगी रहती है जिस पर 'न' 'त' तबले के बोल निकलते है जिसे चाँटी या किनार कहते है।

लव या मैदान : दाहिने तबले के दाहिने मुख में स्याही और चाँटी के मध्य भाग को लव कहते हैं इस भाग पर तिं ता आदि वर्ण निकलते है। इसमें निकलने वाली सभी ध्वनियां आसदार होती है अतः उनमें देर तक गूंज बनी रहती है, वादन की दृष्टि से 'लव' तबले का बहुत महत्वपूर्ण भाग है। अच्छी पुडी की पहचान लव पर बजने पर ही पता चलती है।

बद्धी या द्वाल : मोटे, चमड़े की लगभग एक सेमी. चौड़ाई और लम्बी पट्टी को बद्धी, द्वाल या तस्मा कहते है। जो गजरे के छिद्रों के बीच से चमड़े की बद्धी डाल देते है, इसका प्रयोग तबले की पूड़ी को मुख्य शरीर से कसने के काम आता है।

कूडी : जिस प्रकार दाहिने तबले में लकड़ी होती है, उसी प्रकार बाँये में कूड़ी होती है, इसी पर चमड़ा मढ़ा जाता है यह अधिकतर मिट्टी, पीतल या ताँबे का बनता है।

गुडरी : तबले की पेंदी मे चमडे का छोटा गोल सा पहिया जैसा लगा रहता है जिनके बीच से बद्दी या डोरी पहनाई जाती है यह तबले का प्रमुख हिस्सा है इसके टूटने पर तबला बिखर जाता है।

ईडुरी : कुछ लोग इसे 'गिन्डली' भी कहते है जो रिंग नुमा होता है। ईडुरी को मूँज या कपड़े को गोल करके बनाया जाता है। इस पर रखकर तबला वादक बजाते है, ऐसा करने से गूँज बढ़ जाती है।

पखावज

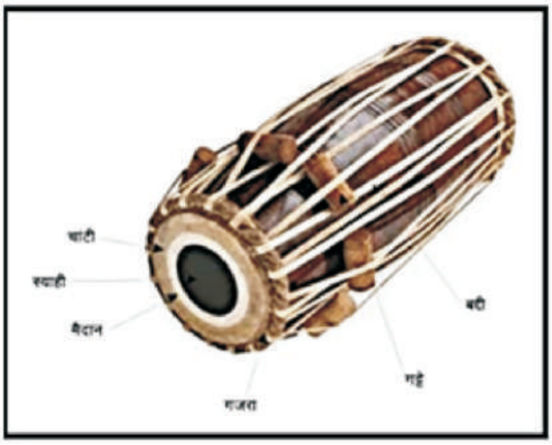

पखावज भारतीय संगीत का प्राचीनतम वाद्य है, जिसका पूर्व नाम मृदंग और आंकिक था। अनेक प्राचीन, पौराणिक ग्रंथो में इसका प्रमुखता से उल्लेख हुआ।

पखावज काष्ठ निर्मित बेलनाकार वाद्य है, जिसके दोनों मुखों पर चर्म मढ़ा होता है। दाहिने मुख पर स्याही लगी होती है तबले की तरह, जबकि बाएँ मुख पर जो अपेक्षाकृत कुछ बढ़ा होता है–आटे का लेपन किया जाता है जब स्वर नीचा करना होता है तो आटा कुछ अधिक लगाते है ऊँचा स्वर करने के लिए आटा कम कर देते है।

दायाँ तबला और बायाँ डग्गा दोनों के निचले भाग मिलाकर एक जगह ढोलक की तरह रख दिये जाएं तो पखावज का ही रूप बन जाता है। पखावज में दायाँ बायाँ अलग–अलग न होकर दोनों का आकाश (पोल) एक ही है यही कारण पखावज में गूँज अधिक पाई जाती है क्योंकि एक तरफ थाप देने से दूसरी और गूँज स्वयं उत्पन्न होती है।

पखावज की दायीं पूडी में चाँटी लव, स्याही, गजरा आदि अंग दायें तबले के समान ही होते है पखावज में ईडरी के स्थान पर बाँयी पूडी गूंथी रहती है पखावज में चाँटी का काम नहीं के बराबर होता है।

प्राचीन संगीत में पखावज का प्रयोग प्रमुखता से होता था। आज भी विभिनन प्रकार की वीणाओं की संगति, ध्रुवपद, धमार, जैसी गायकी तथा नृत्य की संगति में इसका प्रयोग किया जाता है। पं. पुरूषोत्तम दास पागल दास, रामकिशोर दास, रमाकांत पाठक, अखिलेश गुंदेचा आदि का पखावज वादन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

अपने वाद्य को मिलाने का ज्ञान

तबला मिलाने से अभिप्राय है कि तबले को किसी एक ऐसे स्वर में कर लेना, जिससे तबला सुन्दरता पूर्वक बोल सके। इसके लिए स्वर का ज्ञान होना आवश्यक है।

आवश्यकता– गायन वादन आदि कार्य केवल तभी भले लगते है जब गायक का गला या वाद्यों के तार उचित रूप से स्वर में हों । इसी प्रकार तबला भी अपना वादन कार्य तभी भली–भांति कर सकता है। जब वह ठीक स्वर में मिलता हो। इसलिए तबले की कला में उसे स्वर में मिला लेना एक आवश्यक तथा महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है।

तबले को स्वर में मिलाने की कला

तबला मिलाने का तात्पर्य तबले की बनावट के अनुसार तबले की ध्वनि को किसी निश्चित स्वर में स्थापित करना होता है । बाएं के मुख पूड़ी पर लगे स्याही के घेरा एवं मोटाई के अनुसार दायें अलग–अलग स्वरों में स्थापित करने से पूर्व दायें मुख का व्यास, चमड़े को मोटाई और स्याही की बनावट का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक होता है ।कम समय में तबले की ध्वनि को सारंगी, हारमोनियम, तानपुरा, सितार, शहनाई आदि के स्वर के अनुसार स्थापित करना या मिलाना एक कला है ।

मौलवी मो. इसहाक खां ने करीब 105 साल पहले रिसालाए तबला नवाजी पुस्तक उर्दू में लिखा था । उसमें उन्होंने तबला मिलाने की विधि को संक्षेप में लिखा है–कि जिस स्वर में गाना या कोई साज बजाना मंजूर होता है उसी सुर में तबला, जिसे दायां भी कहते है मिला लेते है और सब तरफ से एक ही स्वर में मिलाया जाता है, और इसको मिलाने का कायदा यह है कि हथौड़ी से अड्डों (गट्टों) को नीचे की तरफ ठोकते है जब थोड़ी सी कसर सब तरफ से हम आवाज होने में रह जाती है तो गजरे को ठोंक–ठोंक का हम आवाज करते है और ऊँगली से बजा–बजा कर देखते जाते है । चढाना मंजूर होता है तो नीचे की तरफ जर्ब (चोट) लगाते है ।उतारना मकसूद होता है तो उलटी जर्ब नीचे की तरफ से ऊपर को लगाते है और जब मिल जाता है तो थाप देकर देखते है कि अच्छी तरह से मिल गया या नहीं । थाप लगाने का कायदा है कि पट हाथ को किसी कदर तिरछा करके सब उँगलियाँ सीधी रखते है और पांचवी ऊँगली यानी छुंगली से टेबल के मैदान में निस्फ (आधा) स्याही दबाकर जर्ब लगाते ही हाथ उठा लेते है चौथी ऊँगली हाथ की झोंक से अपने आप लग जाती है ताकि खूब बड़ी आवाज सुरीली निकले और हर तरफ से हम आवाज होने यानी मिल जाने का हाल मालूम हो जाये ।बाएं का सुर हमेशा तबले से नीचा रहता है और इसके लिए कोई खास सुर मिलाने का मुकर्रर नहीं है । सिर्फ इतना खींच लेते है कि उतरा हुआ मालुम पड़े और गूँजदार आवाज बेतकल्लुफ निकलती रहे । जब यह ढीला हो जाता है तो इसका बाध (बद्धी) खींच देते है ।तबले की तरह ठोंक कर सब तरफ से एक ही सुर में नहीं मिलाया जाता है और चूंकि इसको बाएं हाथ से बजाते है इस वास्ते इसको बायाँ कहते है । तबले का सुर हमेशा बायें के मुकाबिल में टीप में रहना चाहिए ताकि हर वक्त दोनों के सुरों की आस मिलती रहे और ज्यादा लुत्फ आये ।

मूल सिद्धान्त

- चौड़े मुहं का तबला नीचे स्वर में तथा छोटे मुहं का ऊँचे स्वर में अच्छा बोलता है।
- तबला, गायक वादक के स्वर तथा राग के अनुसार सा. प, सां अथवा म में मिलाया जाता है।
- सितार आदि वादन में तथा स्त्रियों के गायन में तबला तार सां में मिलाया जाता है।
- तबला अधिक ऊँचा नीचा होने पर गट्टों को तथा थोडा ऊँचा– नीचा होने पर गजरे को ठोंकते है।
- स्वर ऊँचा करने के लिए गट्टे या गजरे पर उपर से तथा नीचा करने के लिए नीचे से प्रहार करते है।

विधि– तबला मिलाने की दो विधियाँ प्रचलित है–प्रथम कुछ लोग आमने–सामने के घरों को मिलाते हुए 16 घरों को मिला लेते है। जैसे प्रथम में तबले के किसी एक घर को मिलाकर फिर उसके उलटे अर्थात नवें घर को मिला लेते है। इसके बाद पांचवा घर मिलकर फिर उसके ठीक सामने वाला यानि तेरहवां घर मिला लेते है। इसके बाद तीसरा, ग्यारहवां तथा सातवाँ, पन्द्रहवां घर मिलाते है। इस प्रकार आमने–सामने के घरों को मिला लेते है।

दूसरी पद्धति में किसी एक घर में प्रारंभ कर क्रमशः एक के बाद दूसरा, तीसरा, चौथा आदि सभी घर मिला लेता है। दोनों ही विधियाँ ठीक है । मिलाते समय एक हाथ से तबले को बजाते हुए ऊंचाई–निचाई का अंदाजा लगाते है । दूसरे हाथ से हथौड़ी द्वारा गट्टों पर अथवा गजरे पर आवश्यकतानुसार ऊपर नीचे आघात करते है ।

बायाँ या डग्गा किसी विशेष स्वर में नहीं मिलाया जाता है।आवश्यकतानुसार हथौड़ी से गजरे पर आघात करके उतारा या चढ़ाया जाता है ।कुछ लोग बाएं में बद्धी के स्थान पर डोरी का प्रयोग करते है और इसमें गोल छल्ले पहना देते है, इसका प्रयोग बायाँ उतारने और चढाने में किया जाता है।

हथौड़ी– तबला या पखावज मिलाने के लिए एक विशेष तरह की पीतल या लोहे की हथौड़ी होती है, जिसका एक सिरा पतला और चपटा होता है उसी भाग की उपयोगिता पखावज के बाएं पर लगा आँटा खुड़चकर निकालने के लिए होता है ।

महत्वपूर्ण बिन्दु

कायदा	–	तबला वादन की विशेष सामग्री
पलटा	–	कायदे के बोलों को उलट पुलट कर बजाना
वर्ण	–	तबले के बोल
ध्रुवपद	–	एक गीत प्रकार
गत	–	किसी भी राग में सितार के बोलों की तालबद्ध रचना
शास्त्रीय रचना	–	शास्त्रों पर आधारित रचना
विलम्बित ख्याल	–	गायन का एक प्रकार
मसीतखानी गत	–	विलम्बित लय में सितार की गत
रजाखानी गत	–	द्रुत लय में सितार की गत
नौटंकी	–	नाटक का अभिनय करना।
नाट्यशास्त्र	–	भरतमुनि द्वारा रचित ग्रंथ
लोक नृत्य	–	प्रसंगानुसार जनमानस द्वारा रचे गये नृत्य
मिजराब	–	सितार बजाने की लोहे के तार की अंगुठी
गज	–	वाद्य बजाने की छड़ी
लोकनाट्य	–	लोक जीवन के विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. तबले के मुख पर चमड़े से मढ़ा भाग कहलाता है–

   (क) पूडी (ख) स्याई (ग) गट्टे (घ) गजरा

2. तबले के पेंदी में चमड़े का छोटा गोल पहिये जैसा भाग कहलाता है–

   (क) गजरा (ख) गुडरी (ग) डग्गा (घ) मैदान

3. तबले में गट्टे की संख्या कितनी होती है–

   (क) 6 (ख) 8 (ग) 4 (घ) 9

4. आटे का लेपन किस वाद्य में किया जाता है–

   (क) तबला (ख) ढोल (ग) पखावज (घ) नगाड़ा

5.	पखावज की संगति की जाती है–

(क) ध्रुपद गायकी में	(ख) ग़जल में	(ग) लोकगीत में	(घ) ठुमरी में

6.	तबला है–

(क) अवनद्व वाद्य	(ख) सुषिर वाद्य	(ग) तत् वाद्य	(घ) घन वाद्य

उत्तरमाला– 1 (क) 2 (ख) 3 (ख) 4 (ग) 5 (क) 6 (क)

लघुउत्तर प्रश्न–

1.	दाहिने व बाँये तबले का काठ किस का बना होता है ?
2.	स्याही किस की बनती है ?
3.	तबले में गट्टे क्यों लगाये जाते है ?

विस्तृत प्रश्न–

1.	तबला का पूर्ण अंग वर्णन कीजिये।
2.	पखावज का अंग वर्णन कीजिये।

भारतीय संगीतकारों पर जारी डाक टिकिट